

TS. 7, 2, 4. आचक्ष्व यद्वत्तं द्रव्यम् MBh. 3, 2276. सर्वमेतद्यथावृत्तमाचक्षते 2393. 2693. आचक्ष्वं पुरं गत्वा संग्रामे विजयं मम 4, 1145. 9, 1626. 12, 3013. R. 1, 9, 26. 62. 2, 18, 11. 18. 63, 41. 64, 11. 3, 20, 5. Buḥg. P. 1, 18, 23. यो ह्यस्य धर्ममाचष्टे mittheilt M. 4, 81. स त्वं नाम च गोत्रं कुलं चाचक्ष्व R. 3, 33, 24. Draup. 2, 5. स च पृष्ट्वा मातरं पितरं च स्ववृत्तान्तं चाचक्षते Itih. bei Śā. zu RV. 1, 123, 1. ऊवाचक्षतीतिर्गम्यः साद्यः क्रौ म इति Lāt. 8, 3, 1. यदस्मै कुमारं ज्ञातमाचक्षीरन् Gobh. 2, 7, 17. गो धयत्तो परस्मै नाचक्षीत Pār. Grh. 2, 17. M. 4, 59. Jāñ. 1, 140. आचक्षतेतां तु कृत्स्नस्य धृतराष्ट्रं स-भागतम् MBh. 3, 3337. Ragh. 12, 55. आचक्षते — भर्त्रे कन्यां शिखाण्डनीम् gestand, dass es ein Mädchen sei, MBh. in Benf. Chr. 53, 1. तत्राचक्षन्महं दैवान् MBh. 3, 601. 13, 2384. 2388. M. 4, 59. आचक्ष्व मे वलिम् sage mir, wo er ist, MBh. 12, 8061. आचक्षीरंश्च नो ज्ञात्वा 3, 1406. रत्नसामाचक्षते ऽथ राघवौ सह सीताया R. 3, 26, 1. 6, 1, 21. anmelden, vorstellen: तस्याचक्षत (2. pl. imperat.) माम् MBh. 13, 1986. रामाय चाचक्षते ताम् R. 3, 2, 9. तं रथं राजपुत्राय सूतः — आचक्षते meldete, dass der Wagen bereit stehe, 2, 39, 13. anzeigen, verkünden so v. a. deuten auf: भैरवमुच्चैर्चिरवन्मगो ऽस-कृद्गमाघातमाचष्टे Varāh. Brh. S. 29, 3. 34, 6. 52, 108. 83, 56. 86, 104. 89, 6. anreden, zu Jmd sprechen, mit dem acc. der Person: झङ्गराजमाचक्ष्व Daśak. in Benf. Chr. 189, 2. — 3) benennen, nennen: समानमेव सत्पुन-र्ननिवाचक्षते Çat. Br. 1, 6, 4, 8. शर्व इति यथा प्राच्या आचक्षते भव इति य-था वाह्नीकाः 7, 3, 8. 2, 1, 2, 4. 3, 1, 3, 3. 4, 1. तया माचक्षते 6, 1, 2, 13. 13, 3, 4, 7. 14, 6, 8, 3. Āçv. Grh. 3, 5. Nir. 4, 1. Kānd. Up. 1, 3, 6. Taitt. Up. 1, 3, 2. 2, 6. Buḥg. P. 5, 22, 6. Hierher ist auch zu ziehen: तस्मादेनं स्व-पितोत्याचक्षते deshalb sagt man von ihm, dass er schlafe, Kānd. Up. 6, 8, 1.

— अन्वा nach Etwas benennen: एतमेव तदन्वाचक्षते Çat. Br. 2, 4, 1, 2.

— अन्वा 1) anschauen: (तान्) अन्वाचष्टानुरागाच्चैरन्धीभूतेन चतुषा Buḥg. P. 1, 9, 11. nach Burnouf: sprechen zu. — 2) sprechen: अन्वाचष्टं प्रचक्रमे Buḥg. P. 8, 3, 14.

— उदा laut ansagen: तस्माद्धर्षुरेव गोर्वीर्याण्युदाचष्टे Çat. Br. 3, 3, 4.

— प्रत्या 1) zurückweisen, abweisen, ablehnen; mit dem acc. der Sa- che oder der Person: दीयमानं न प्रत्याचक्षती Kāt. Çr. 22, 1, 32. Lāt. 1, 1, 9. 8, 5. Çāñkh. Çr. 5, 1, 10. न सेनपतितं धर्म्यमुपभोगं यदच्छ्या । प्र-त्याचक्षते MBh. 12, 6676. Kull. zu M. 4, 250. न कं चन वसतौ प्रत्याचक्षत Taitt. Up. 3, 10, 1. गुरुपुत्रीति कृत्वा प्रत्याचक्षे न दोषतः MBh. 1, 3272. Buḥg. P. 8, 20, 3. Daśak. in Benf. Chr. 181, 6. zurückweisen so v. a. ver- werfen Kāç. zu P. 1, 2, 56. — 2) Jmd (acc.) antworten: प्रत्याचष्टात्मर्द्धे-वान् Buḥg. P. 3, 13, 11.

— संप्रत्या renarrare bei West. ist zu streichen, da संप्रत्याचक्षते MBh. 1, 26 und 2306 in संप्रति heut zu Tage und आचक्षते erzählen zu zerlegen ist.

— व्याहस्य, recitiren: चतुर्हस्तान् TBr. 2, 2, 1, 4. 2, 6. TS. 2, 3, 11, 2. Çat. Br. 4, 6, 9, 18. स्रष्टां सूक्तं व्याचक्षणाः 13, 4, 3, 3. — 2) auseinan- setzten, erklären, erläutern: व्याख्यास्यामि ते व्याचक्षणास्य तु मे निदि-ध्यासस्व Çat. Br. 14, 3, 4, 4. 4, 1, 3, 10. इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद्याच-क्षन्ति Kenop. 3. केचिदत्र यण इति पञ्चमी मय इति षष्ठौ व्याचक्षते Kāç. zu P. 8, 4, 47 und 6, 1, 26. Kull. zu M. 10, 113.

— समा berichten, erzählen, über Etwas oder Jmd aussagen: एवं गते समाचक्ष्व स्वयं निश्चित्य हेतुभिः MBh. 2, 634. तत्सर्वं नः समाचक्ष्व Buḥg. P. 1, 4, 13. R. 3, 73, 9. कुलं वलं नाम तथैव वीर्यं समाचक्षते 33, 62. स त्वं सीतां समाचक्ष्व यत्र येनापि वा कृता 73, 39. तां समाचक्ष्व कल्याणीं यदि स्याच्छैव्य मानुषी sage aus, ob sie ein menschliches Wesen ist, Draup. 4, 5.

— परि 1) übersehen, übergehen, verschmähen: श्यापर्षान्परिचक्ष्णां वि-श्यापर्षयज्ञमात्रे Ait. Br. 7, 27. अन्नं न परिचक्ष्णीत Taitt. Up. 3, 8, 11. को वै न विष्णुं परिचक्ष्णीत Buḥg. P. 4, 14, 33. परिचक्ष्ति inf. in der v. l. des SV. II, 8, 1, 1. — 2) verwerfen: तड पुनः परिचक्षते hinwiederum verwirft man dieses Verfahren Ait. Br. 8, 7. — 3) für schuldig erklären: यो न्वेवं मा-नुषं ब्रह्मणं कृति तं न्वेव परिचक्षते ऽथ किं य एतम् Çat. Br. 3, 9, 4, 17. 9, 3, 1, 62. 10, 3, 2, 5. — 4) erzählen: इतिहासमिमं विप्राः पुराणाः परिचक्षते MBh. 1, 1025. 6653. — 5) von Etwas sprechen, erwähnen, anerkennen: अग्रजस्य महाभागा न दारं परिचक्षते MBh. 1, 4654. तस्मादिह कृतप्रज्ञा-स्त्यागं न परिचक्षते 12, 294. — 6) benennen, nennen: वेदप्रदानाद्वार्य पितरं परिचक्षते M. 2, 171. विधिहीनम् u. s. w. यत् तं तामसं परिचक्षते Bhāg. 17, 13, 17. MBh. 13, 3364. अश्चतार्यं तद्व्यापि मानवैः परिचक्ष्यते 216. — 7) zu Jmd (acc.) sprechen, antworten Buḥg. P. 1, 17, 21. — Vgl. परिचक्ष्य.

— प्र 1) erzählen, berichten: एतत्प्रचक्ष्व मे MBh. 1, 8331. 2201. 3, 10463. Ragh. 8, 85. — 2) annehmen, ansehen als, halten für: नैव दारु-णातमेकं सञ्जालायाः (शिवायाः) प्रचक्षते Varāh. Brh. S. 89, 7. क्रोधाद्भवानि च त्रीणि व्यसनानि प्रचक्षते R. 3, 13, 3. दासवर्गस्य तत्पित्रो भागधेयं प्रच-क्षते M. 3, 246. एतौ वर्षास्वनध्यायावध्यायताः प्रचक्षते 4, 102. 9, 147. 219. 11, 244. Śiv. 3, 29. Hit. III, 86 (wo प्रचक्षते zu lesen ist). Buḥg. P. 3, 22, 3. 4, 4, 18. benennen: तं देवानामितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते M. 2, 17. 59. 91. 140. 3, 28. 73. 8, 132. 10, 14. 12, 12. Çrct. 34. Buḥg. P. 3, 20, 41. 26, 25. — caus. erleuchten, erhellen: प्र चक्ष्य रोदसी वासयोयसः RV. 1, 134, 3. अग्निं न मा मयितं सं दिदीपिः प्र चक्ष्य कृष्णं वस्यसो नः 8, 48, 6.

— अभिप्र sehen: विसंज्ञा जीवितानिभिप्रचक्षे (infio.) RV. 1, 113, 6.

— संप्र auseinanderzusetzen: दग्धस्योपशमाश्रय चिकित्सा संप्रचक्ष्यते Suçr. 1, 37, 13.

— प्रति 1) sehen, gewahr werden: प्रति यच्छष्टे अर्नमनेना अयं हिता वरुणो मया नः सात् RV. 7, 28, 4. 2, 24, 6. 7. अपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्येव sie geht, nachdem sie nur etwas von jener gesehen hat, 1, 124, 8. 7, 104, 25. यदा तु सर्वभूतेषु दारुषमिव स्थितम् । प्रतिचक्षती मां लोकः Buḥg. P. 3, 9, 32. — 2) erwarten: प्रत्यक्ष — दिज्ञागमनमेव सः Buḥg. P. 9, 4, 41. — 3) sehen lassen, erscheinen lassen: चित्रो न मूरः प्रति चक्षि भानुम् RV. 7, 3, 6. ऊर्ध्वो गन्धर्वो अग्निं नाकं अस्यादिश्रा त्वा प्रतिचक्ष्णां अस्य 9, 83, 12. — Vgl. प्रतिचक्षण, प्रतिचक्ष्य, सुप्रतिचक्ष्.

— वि 1) erscheinen, leuchten: उपस्थे मातुर्वि चष्टे RV. 5, 19, 1. त्रयः केशिनं स्रुवा वि चक्षते 1, 164, 44. (सुतः) विचक्ष्णां विराचयन् 9, 39, 3. 10, 53, 3. तस्मै सहस्रमन्त्रिर्वि चक्षे (zugleich mit Bed. 2.) 79, 5. — 2) deutlich sehen, erblicken. hinblicken auf: व्यपनगच्छ RV. 2, 13, 7. शतं नो रास्त्र शरदो विचक्षे 27, 10. कविं कण्ठं विचक्षे 1, 116, 14. अन्धा त-मोसि डधिता विचक्षे 4, 16, 4. तदयं केतो कृद् आ वि चष्टे das sieht der Verstand in meinem Innern 1, 24, 12. उरु चष्टे वि विष्पतिः 8, 23, 16. 4, 98, 1. 113, 5. 8, 43, 16. 10, 3, 1. 177, 1. AV. 7, 23, 2. विष्टं विचक्षते धीरा योगरुद्धेन चतुषा Buḥg. P. 3, 11, 17. 2, 6, 36. 4, 12, 25. 24, 59. 26, 13. 8, 18,